हम युद्ध में हैं!

कैसे हासिल करेंगे वो जीत जिसके हम हक़दार नहीं हैं ?

क्या आप स्वयं को अयोग्य, दुखी, शक्तिहीन और खोया हुआ महसूस करते हैं? यदि हाँ, तो हम आपके लिए आशा और उत्साह का एक संदेश पेश करते हैं! यीशु के शब्द आप पर लागू होते हैं : "हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा" (मत्ती 11:28).

व्यवहारिक प्रेम!

क्या अपने कभी यीशु के उस महान प्रेम पर ध्यान दिया है जो उसने आपको और मुझे बचाने के द्वारा दिखाया है? "छोटी बाइबल" इसे इस प्रकार बताती है: **" क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाये" (यूहन्ना 3:16).** यीशु मसीह के एक चेले यूहन्ना ने इस प्रेम का व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया, और वह इसके बारे में इस प्रकार लिखता है: **"प्रेम इसमें नहीं, कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उस ने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए अपने पुत्र को भेजा" (1 यूहन्ना 4:10).** कुछ लोग प्रेम करते हैं! यीशु ने हमारे और आपके लिए अपने प्राण दे दिये ताकि हमें एक सुन्दर भविष्य, आशा और अनन्त जीवन मिल सके.

यीशु हमें कैसे बचा सकता है ?

लेकिन यीशु हमें कैसे बचाता? ऐसा करने के लिए उसे वहाँ सफल होना था जहाँ आदम असफल हो गया था. यीशु ऐसा करने में कैसे सफल हुआ, क्या इसलिए कि वह परमेश्वर है ? पौलुस इस का वर्णन इस प्रकार करता है: **"जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो. जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा. बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया" (फ़िलिप्पियों 2:5-11).** यूहन्ना इसे इस प्रकार से कहता है : **"आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था. यही आदि में परमेश्वर के साथ था. सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई... और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा" (यूहन्ना 1:1-3+14).** इसे समझना कठिन है: ये आयतें यीशु को "वचन" के रूप में पेश करती हैं. यीशु ही मनुष्य रूप में देह धारण करके आया था. पौलुस इस बात का सत्यापन इन शब्दों में करता है: **"इसलिए जब कि लड़के मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका भागी हो गया" (इब्रानियों 2:14).** दूसरे स्थान पर पौलुस लिखता है कि परमेश्वर ने **"अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में"** भेजा **(रोमियों 8:3).** हमें बचाने के लिए यीशु मसीह को वहाँ सफल होना था, जहाँ आदम (मनुष्य) असफल हो गया था. परमेश्वर होने पर भी वह एक दुर्बल मनुष्य के समान हो कर आया. केवल इसी प्रकार वह हमें बचा सकता था. पौलुस, मसीह के लक्ष्य और संघर्ष का वर्णन इन शब्दों में करता है : **"इस कारण उसको चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाईयों के समान बने; जिस से वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बंध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने, ताकि लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित्त करे. क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है..." "क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; बरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला. इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाब बांधकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पायें, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे" (इब्रानियों 2:17-18; और 4:15-16).**

उद्धार की आधारशिला यही है– यीशु ने पाप रहित जीवन बिताया. बैतलहम की एक चरनी में उस के जन्म के कुछ दिन बाद शैतान ने हेरोदेस के द्वारा उस की जान लेने की कोशिश की **(मत्ती 2:7-23).** शैतान ने उसे पाप करने के लिए प्रलोभन दिया **(मत्ती 4:1-11).** फरीसियों और शास्त्रियों ने उस पर झूठे आरोप लगाकर उसे पाप करने के लिए उकसाया. अनेक प्रकार से उसकी ताड़ना और परीक्षा की गई. उसे कोड़े मारे गये, सताया गया, पीटा गया और उसके मुंह पर थूका गया. उन्होंने उसके सिर पर काँटों का एक मुकुट रखा, और यद्यपि उसने कभी कोई पाप नहीं किया था फिर भी एक कुकर्मी की नाईं उन्होंने उसे क्रूस पर लटका दिया. कलवरी क्रूस पर उसने मेरे और आपके लिए अपने प्राण दे दिये. **"पूरा हुआ"**, यह ज़ोर से चिल्लाने के बाद वह मर गया. जीत हो चुकी थी. कुछ देर बाद उन्होंने उस की पसुली में भाला मारा, जिस से लोहू और पानी निकला. यह प्रमाणित करता है कि वह मर चुका था. यीशु ने अपना लोहू मेरे और आपके लिए बहाया. वह हमारे लिए इसलिए मर गया कि हम अनन्त जीवन पा सकें. उस आत्म बलिदान और प्रेम की कल्पना करें, उसने हमारे लिए अपनी चिंता प्रकट की. क्या हमें भी उसका आभार प्रकट करते हुए उद्धार का वरदान स्वीकार नहीं करना चाहिए ?

उस के कोड़े खाने से हम लोग चंगे हुए हैं

यीशु के अनेक मित्र थे और अनेक दुश्मन. **"वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुखी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उससे मुख फेर लेते थे.वह तुच्छ जाना गया, और, हम ने उसका मूल्य न जाना. निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा- कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा. परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे ही अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शांति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं" (यशायाह 53:3-5).**

"लेकिन", आप पूछ सकते हैं, "यीशु को यह सब क्यों सहना पड़ा?" देखें, बाइबल कहती है: **"पाप तो व्यवस्था का उल्लंघन है"**, और यह कि, **"पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है..." (1 यूहन्ना 3:4; रोमियों 6:23).** और बाइबल यह भी कहती है कि: **"सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3:23).** यहाँ हम सब एक ही जैसे हैं. आरम्भ से तो हम सब दण्ड की आज्ञा के अधीन हैं, क्योंकि हम सब ने पाप किया है. हमारी इसी खोई हुई दशा के कारण, यीशु हमें अनन्त विनाश से बचाने के लिए आया.

हमारी इंद्रियां तथा शरीर और आत्मा के बीच संघर्ष

यद्यपि पृथ्वी ग्रह पर बहुत विनाश हुआ है, फिर भी हम परमेश्वर की सृष्टि: सुन्दर फूलों, पेड़ों, चिड़ियों, जानवरों और व्यक्तियों को देख सकते हैं. मनुष्य और पशु दोनों में ही स्पष्ट इंद्रियां; जैसे आँख, कान, नाक, मुंह और भावनाएं पायी जाती हैं. इन के द्वारा हम प्रकृति की सुन्दरता का आनन्द लेते हैं. हमें अपनी इंद्रियों को प्रकृति की सुन्दरता का आनन्द लेने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए. इस से जीवन बेहतर बनेगा.

ध्यान दीजिये, हमारा एक शत्रु है जिसका नाम शैतान है. ग़लत काम करने के लिए हमें प्रलोभन वही देता है. वह हमारी इंद्रियों के द्वारा प्रलोभन देता है. वह जानता है कि शरीर की लालसाओं के समक्ष हार मान लेने से हम पाप करते हैं. इसलिए वह हमें ऐसी परिस्थितियों में लाता है जहाँ हम देखते, सुनते, चखते और अनुभव करते हैं, जिसके द्वारा वह हमें पाप करने के लिए प्रलोभन देता है. वह हमारे अंगों द्वारा पाप करने के लिए हमें प्रलोभन देता है. वह प्रकृति के नियमों और ईश्वर की व्यवस्था के विरूद्ध कार्य करने के लिए हमें उकसाता है. चूंकि सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने मनुष्यों के मार्गदर्शन के लिए दस आज्ञाओं की व्यवस्था दी है **(निर्गमन 20:3-17).** शैतान जो परमेश्वर का विरोधी है, वह दस आज्ञाओं को तोड़ने के लिए हमें प्रभावित करने का प्रयास करता है. परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करें, जब कि शैतान इस बात का विरोध करता है. शरीर और आत्मा के बीच यह संघर्ष प्रतिदिन, प्रतिमिनट, बल्कि प्रतिपल चलता रहता है. पौलुस इसका वर्णन इस प्रकार करता है: **"पर मैं कहता हूँ; आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे. क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिए कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ. और यदि तुम आत्मा के चलाये चलते हो, तो व्यवस्था के अधीन न रहे...**

शरीर और आत्मा-दो परस्पर विरोधी शक्तियां

शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन. मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म. डाह, मतवालपन, लीला क्रीड़ा, और इनके से और काम हैं, इनके विषय में मैं तुमको पहले भी कह चुका हूँ, कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे. पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं, ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं. और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है. यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी" (गलतियों 5-16-25).

सामर्थ जिसकी हम सबको आवश्यकता है!

जीवन में अपने फैसले स्वयं करने-स्वतंत्र इच्छा, की योग्यता के साथ हमारा सृजन हुआ है. मस्तिष्क का केन्द्र जिसमें चुनने, सोच-विचार करने, और हिसाब-किताब करने की क्षमता है, इंद्रियों के केन्द्र से अधिक शक्तिशाली है. जब हम इस बात से अवगत हैं तो सोच समझ कर अपनी इच्छा का प्रयोग करें. हमारी इंद्रियों से, दूसरे मनुष्यों या स्थितियों से प्रभावित हुए बिना हम अपने फैसले कर सकते हैं. परमेश्वर ने हमें इसी प्रकार का बनाया है, लेकिन वह चाहता है कि हम उस के साथ सहयोग करें. जब हम परमेश्वर की इच्छा को जानेंगे, तभी अपने जीवन में सब से उत्तम फैसले कर पायेंगे. परमेश्वर की इच्छा के अनुसार फैसले करने के लिए हम परमेश्वर से सहायता मांग सकते हैं, जिससे हमें शैतान की परीक्षाओं का सामना करने की क्षमता प्राप्त होती है. यदि हम परमेश्वर की इच्छा जाने बिना स्वार्थपूर्ण फैसले करेंगे तो निश्चय ही बाद में पछतायेंगे. इस प्रकार हमारा काम सर्वप्रथम तो मसीह की इच्छा को अपनी इच्छा जानते हुए, परमेश्वर की इच्छा में अपनी इच्छा को मिला देना है. जब हम उसकी इच्छा के सामने अपनी इच्छा को समर्पित कर देते हैं तो उसकी राह जो सर्वोत्तम है उसके अनुसार इच्छा करने और उसकी भली इच्छा अनुसार कार्य करने में सहायता करने के लिए पवित्र आत्मा हमारे जीवन में आकर कार्य करने लगता है **(फिलिप्पियों 2:13).** जब भी हम अपने स्वार्थ और अंहकार की आज्ञा न मानते हुए, परमेश्वर की इच्छानुसार चलने का फैसला करते हैं, तो हम सारी शक्तियों से बड़ी शक्ति के साथ जुड़ जाते हैं. हमें परमेश्वर से वह शक्ति प्राप्त होती है जो हमें उसकी सामर्थ से जोड़े रहती है, जिस से हम एक नया जीवन-विश्वास का जीवन जी सकते हैं. शैतान द्वारा की जानेवाली परीक्षाओं के विरूद्ध संघर्ष में हमें कौन सी सहायता मिल सकती है ? हम ने पहले ही इस का वर्णन किया है, अब हम इसे क़रीब से देखेंगे: स्वर्ग जाते समय यीशु ने कहा: **"परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और... मेरे गवाह होगे".** दूसरे स्थान पर यीशु ने कहा, **"परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखायेगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण करायेगा."** और अन्त में यीशु ने यह प्रतिज्ञा भी की, **"परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आयेगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बतायेगा" (प्रेरितों के काम 1:8; यूहन्ना 14:26, और 16:13).** परमेश्वरत्व का व्यक्ति पवित्र आत्मा यीशु के गवाह बनने के लिए हमें सामर्थ देगा. वह परमेश्वर के वचन की सच्चाई समझने में हमारी सहायता करेगा. और परमेश्वर की इच्छा अनुसार कार्य करने में हमारी मदद् करेगा. इस प्रकार शैतान के उन प्रलोभनों पर जय पाने के लिए हमें वह सामर्थ प्राप्त होगी, जो हमारे पास नहीं है.

क्या प्रत्येक जन अपनी ही इच्छा में प्रसन्न रह सकता है ?

कुछ लोग सोचते हैं कि हमें अपनी "आंतरिक भावनाओं" पर अपने विश्वास को आधारित करना चाहिए; कुछ लोग कहते हैं कि, "प्रत्येक अपनी ही इच्छा के अनुसार प्रसन्न रहता है." लेकिन बाइबल कहती है: **"एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा" (इफिसियों 4:5).** सृष्टिकर्ता यीशु कहता है, **"मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता" (यूहन्ना 14:6).** इस प्रकार हम अपने ही मार्गों में प्रसन्न नहीं हैं बजाय इसके हमें यीशु के पद चिन्हों पर चलना चाहिए, जो एक मात्र मार्ग है. हमारी "आंतरिक इच्छा" को टटोलने के बजाय हमें उस मार्ग पर चलना चाहिए जो उस ने हमारे लिए अपने वचन में निर्धारित किया है. बहुत सी शिक्षाएं और कलीसियाएं कुछ खास विचार धाराओं या बाइबल की चन्द आयतों के इर्द-गिर्द बनीं हैं. लेकिन सम्पूर्ण सत्य की प्राप्ति सम्पूर्ण बाइबल के वचन के अध्ययन से ही होती है, और पूरा सत्य उद्धारकर्ता यीशु पर केन्द्रित होता है. किसी और ने नहीं, सृष्टिकर्ता ने हमें जीवन दिया है, और उसी के द्वारा ही हमारा अस्तित्व है **(कुलुस्सियों 1:17).** अनन्त जीवन प्रदान करने वाली आशा और भविष्य हमें कोई दूसरा व्यक्ति कभी नहीं दे सकता है. यह तो तभी होता है जब हम यीशु को विश्वास से स्वीकार करके उसके अनुग्रह और उद्धार का वरदान स्वीकार करते हैं. यह फैसला आप को आज ही करना होगा! आप या तो जीवन को चुनेंगे या मृत्यु को. बाइबल कहती है **"क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है; परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है" (रोमियों 6:23).** इस्राएल के अगुवे यहोशू ने मरने से पहले लोगों से कहा कि, "... **आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार करते थे, और चाहे एमोरियों के देवताओं की सेवा करो जिनके देश में तुम रहते हो."** फिर उसने यह साक्षी दी, **"परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूंगा" (यहोशू 24:15).** हम में से प्रत्येक अभी यीशु के पीछे चलने का स्पष्ट और दृढ़ फैसला करे! फिर हम मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश करेंगे, और हमें हमारे जीवन का सच्चा उद्देश्य प्राप्त होगा, तब हम एक उत्तम भविष्य और एक धन्य आशा प्राप्त करेंगे.

सब से बड़े बोझ से कैसे छुटकारा पायें!

यीशु को स्वीकार करने का अर्थ यह भी है कि वह हमारे जीवन से पाप के बोझ को उतारने में सहायता करेगा. यीशु हमें हमारे पापों से बचाने आया **(मत्ती 1:21).** आप जानते हैं कि जब तक हमारे जीवन में अस्वीकार और अपश्चाताप किये हुए पाप हैं, तब तक हम पाप के दास हैं. बाइबल कहती है, **"जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है" (यूहन्ना 8:34).** फिर तो हम चारा डाल कर रस्सी से बंधे हुए एक पशु समान हैं. शैतान हम पर नियन्त्रण करता है, और हम इस दशा में उद्धार नहीं पा सकते, क्योंकि कोई भी अपवित्र और घृणित वस्तु परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करेगी **(प्रकाशितवाक्य 21:27).** इस खोई हुई दशा से छुटकारे के लिए हमें परमेश्वर से प्रार्थना करना चाहिए. केवल यीशु ही हमें छुड़ा सकता है. वह पाप की ज़ंजीरें तोड़ सकता है, और जब हम पाप की ज़ंजीरों से स्वतंत्र होने लगते हैं ठीक तभी वास्तविक संघर्ष आरंभ होता है. पवित्र आत्मा जब व्यक्ति के विवेक को जगाता है, तो व्यक्ति क्रमशः पाप के वास्तविक बुरे रूप को, इसकी शक्ति को, इसकी दुष्टता को और इसके द्वारा होने वाले दर्द को समझ कर पाप को घृणा की दृष्टि से देखने लगता है. हम समझ पायेंगे कि पाप ने हमें परमेश्वर से दूर कर दिया है और हम पाप के गुलाम बन गये हैं. जितना अधिक हम स्वयं ही इस पाप से स्वतंत्र होने का प्रयास करते हैं उतना ही अधिक अपनी असमर्थता को समझने पाते हैं. हमारे उद्देश्य अपवित्र और हमारे हृदय दुष्टता से भरे हैं. हम देखते हैं कि हम स्वार्थी रहे हैं, और हम स्वतंत्र और शुद्ध होना चाहते हैं. हम परमेश्वर की इच्छा से कैसे सहमत हो सकते हैं ? शांति-परमेश्वर की आशीष और प्रेम हमारी आवश्यकता है. पैसे से वह शांति ख़रीदी नहीं जा सकती और न ही हम वह शांति अपनी चतुराई और बुद्धिमानी से प्राप्त कर सकते है. अपने प्रयासों से इसे पाने की हम अपेक्षा नहीं कर सकते. लेकिन परमेश्वर इसे उपहार में हमें देना चाहता है. **"बिन रूपये और बिना दाम" (यशायाह 55:1).** इसे लेने के लिए हाथ खोल कर फैलाइये और यह आपकी है. **"यहोवा कहता है, आओ, हम आपस में वाद विवाद करें: तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तौभी वे हिम की नाईं उजले हो जायेंगे; और चाहे अर्गवानी रंग के हों, तौभी वे ऊन के समान श्वेत हो जायेंगे" (यशायाह 1:18).** यदि हमारा रवैय्या ऐसा हो जाये तो यीशु कहता है, **"मैं तुमको नया मन दूंगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा; और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकाल कर तुम को मांस का हृदय दूंगा" (यहेजकेल 36:26).**

नई पोशाक-जिसके हम हक़दार नहीं हैं

लक्ष्य यह है कि पाप से छुटकारा प्राप्त होना ही चाहिए. हमें अपना पाप यीशु पर लाद देना चाहिए कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित्त करके हमारा उद्धार सुनिश्चित कर सके. हम इसे इस प्रकार समझ सकते हैं; **"उस समय यहोशू तो दूत के साम्हने मैला वस्त्र पहने हुए खड़ा था. तब उस दूत ने उन से जो साम्हने खड़े थे कहा, इसके ये मैले वस्त्र उतारो. फिर उसने उससे कहा, देख, मैंने तेरा अधर्म दूर किया है, और मैं तुझे सुन्दर वस्त्र पहिना देता हूँ" (ज़कर्याह 3:3-4).**

इसका उलटा दूसरा पक्ष भी है. जो घमण्डी हैं और प्रभु के साम्हने नम्रता से अपना पाप स्वीकार करने से इंकार करते हैं, प्रभु उन्हें क्षमा नहीं कर सकता, उनके लिए पाप की मज़दूरी मृत्यु है. पाप दूर होने के बाद ही हम धर्मी घोषित हो सकते हैं.

लूका रचित सुसमाचार के 15 अध्याय में यीशु खोऐ हुओं को पुनः खोजने के विषय तीन दृष्टान्त बताता है. अन्तिम दृष्टान्त में वह उस खोऐ हुए पुत्र के विषय बताता है जो पिता से अपना हिस्सा मांगता है और ऐसा करके वह अपने पिता और उस के घर से बहुत दूर चला जाता है. वह अपना सब धन उड़ा देता है और अन्ततः स्वयं को सुअरों के साथ सुअरों का चारा खाते हुए पाता है. कुछ समय बाद वह अपने आपे में आता है और ऐहसास करता है कि उस जीवन में उसके लिए कोई भविष्य नहीं था. उसने अपने पिता के पास वापस जाने का निर्णय किया, और अपने फैसले के अनुसार, वह उठा और घर की ओर चल पड़ा. तब, जब वह पुत्र अपने घर से अभी दूर ही था, उस का पिता उसे देख लेता है. जब उसने उसके फटे- पुराने वस्त्र देखे तो उसे गंदा और दुःखदायी दशा में पाया. पिता ने उस पर तरस खाया, उस की ओर दौड़ कर उसे गले लगाया और उसे बहुत चूमा. **"पुत्र ने उस से कहा; पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ... परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा; झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकाल कर उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी और पावों में जूतियां पहिनाओ. और पला हुआ बछड़ा ला कर मारो ताकि हम खायें और आनन्द मनावें. क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है: खो गया था, अब मिल गया है: और वे आनन्द करने लगे" (लूका 15:21-24).** इस कहानी में वस्त्र: मसीह की धार्मिकता की पोशाक का प्रतीक हैं. सर्व प्रथम, पुत्र को अपने गंदे वस्त्र उतारने ही होंगे और फिर नये वस्त्रों को स्वीकार कर उन्हें पहिनना होगा. ठीक इसी प्रकार कोई पापी भी पश्चाताप करने के बाद विश्वास द्धारा अनुग्रह से मसीह की धार्मिकता का वस्त्र प्राप्त करता है और उस उद्धार को प्राप्त करता है जो मसीह यीशु में है. अब प्रश्न यह है: क्या हम पापी जीवन में बने रहते हुए, अनैतिकता और दुष्टता अर्थात् सुअरों का आत्मिक भोजन खाना पसंद करेंगे या हम परमेश्वर की खुली हुई बाहों में समा जाना पसंद करेंगे जो प्रत्येक पश्चातापी पापी को आनन्द के साथ स्वीकार करता है ? फैसला आपके हाथ में है: मेरा फैसला मेरे हाथों में है! लेकिन फैसला तो हमें करना ही होगा क्योंकि केवल इच्छा करने से या फिर सुअरों का आत्मिक खाना खाने से कोई लाभ नहीं होगा. हमें कदम उठाना ही होगा! हमें यीशु के पास "जाना" और उसके उद्धार और अनन्त जीवन के वरदान को स्वीकार करना ही होगा.

सशर्त-उद्धार

आइये, जबकि हम संघर्षरत हैं, परमेश्वर की कुछ प्रतिज्ञाओं को याद करें: **"यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है "(1 यूहुन्ना 1:9). "जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सुफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जायेगी" (नीतिवचन 28:13).** जैसा कि हम देखते हैं कि उद्धार शर्तों पर आधारित है. यीशु ने हमें बचाने के लिए सब कुछ पूरा कर दिया है, किन्तु यह आप पर और मुझ पर निर्भर करता है, कि हम चाहें तो उद्धार को स्वीकार करें या तिरस्कार करें. जब दाऊद ने ऐहसास किया कि उसने पाप किया था, उसने कहा : **"मैंने यहोवा के विरूद्ध पाप किया है" (2 शमूएल 12:13).** बाद में उस ने इस घटना का वर्णन इस प्रकार से किया: **"जब मैंने अपना पाप तुझ पर प्रगट किया और अपना अधर्म न छिपाया, और कहा, मैं यहोवा के साम्हने अपने अपराधों को मान लूंगा; तब तू ने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया" (भजन संहिता 32:5).** यीशु ऐसा ही है. वह हमेशा उस व्यक्ति को क्षमा करता है जो अपने पापों को स्वीकार करते हुए पश्चाताप करता है और अपने बुरे मार्गों से फिर जाता है. एक बार ऐसा होने पर आंतरिक परिवर्तन आरम्भ हो जाता है. पौलुस इस अनुभव का वर्णन इस प्रकार से करता है: **"सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गयी हैं ; देखो, वे सब नयी हो गईं" (2 कुरिन्थियों 5:17).** पवित्र आत्मा आपके जीवन में आने से आपकी बुद्धि बदल जाती है. इस रूपांतरण और पवित्र आत्मा के द्धारा सामर्थ के स्रोत की हम सब को आवश्यकता है. प्रभु करे, हम सब खुशी से इस पेशकश को स्वीकार करें! इस के अलावा, वास्तविक जल्दी भी है, क्योंकि संसार अधार्मिकता में बढ़ रहा है, और यदि हम परमेश्वर का हाथ पकड़ कर अभी उस के साथ चलना आरम्भ नहीं करते तो संसार शीघ्र ही हमें अपने रंग में रंग लेगा.

पापों की क्षमा

प्रभु की प्रार्थना में यीशु कहता है: **"और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर" (मत्ती 6:12).** याकूब की पत्री में बाइबल कहती है,**"इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के साम्हने अपने- अपने पापों को मान लो; और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो जिस से चंगे हो जाओ" (याकूब 5:16).** यह दिखाता है कि यदि हम में से किसी ने किसी दूसरे को कोई भावनात्मक या शारीरिक चोट पहुंचाई है, तो हमें उसके साम्हने अपनी ग़लती मान लेना चाहिए और उसको हमें पूरे दिल से क्षमा कर देना चाहिए. यदि आप ने खुले रूप में पाप किया है तो आपको खुले रूप में क्षमा मांगना चाहिए. व्यक्तिगत अपराधों को सम्बंधित व्यक्ति से व्यक्तिगत रूप में मान कर पश्चाताप करना चाहिए. अन्तिम क्षमा यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर से ही मिलेगी. हमें अपने सब पाप यीशु पर डाल देना चाहिए कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित्त कर सके! अपने दिल को साफ करना आवश्यक है, क्योंकि यीशु कहता है, **"धन्य हैं वे जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे" (मत्ती 5:8).** यूहन्ना भी लिखता है, **"और उस में कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करने वाला, या झूठ का गढ़ने वाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा, पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं" (प्रकाशितवाक्य 21:27).**

ने अपनी ग़लती मान लेना चाहिए और उसको हमे पूरे दिल से क्षमा कर देना चाहिए. यदि आप ने खुले रूप में पाप किया है तो आपको खुले रूप में क्षमा मांगना चाहिए. व्यक्तिगत अपराधों को सम्बंधित व्यक्ति से व्यक्तिगत रूप में मान कर पश्चाताप करना चाहिए. अन्तिम क्षमा यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर से ही मिलेगी. हमें अपने सब पाप यीशु पर डाल देना चाहिए कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित्त कर सके! अपने दिल को साफ करना आवश्यक है, क्योंकि यीशु कहता है, "धन्य हैं वे जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे" (मत्ती 5:8). यूहन्ना भी लिखता है, "और उस में कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करने वाला, या झूठ का गढ़ने वाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा, पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं" (प्रकाशितवाक्य 21:27).

पवित्र आत्मा का कार्य

हमें इस बात का ऐहसास कैसे होता है कि हमें अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए ? पवित्र आत्मा निरन्तर हमें प्रेरणा देता रहता है कि हम स्वयं को परमेश्वर के समक्ष दीन करें **(फिलिप्पियों 2:13).** वह हमें प्रेरित करता है कि हम विरोध न करें. हमें स्वयं को दीन करना, अपने घमण्ड का त्याग करना और अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए. फिर यीशु हमारा दोष अपने ऊपर ले लेता है. अनुग्रह ही से विश्वास द्धारा, हम अयोग्य होने पर भी धर्मी ठहराये जाते हैं. पिता हमें धर्मी मानता है, क्योंकि यीशु की धार्मिकता हमारे खाते में डाली जा चुकी है. यशायाह नबी इस क्षमादान का इस प्रकार से वर्णन करता है: **"मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊंगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाये, और धर्म की चादर ओढ़ा दी है" (यशायाह 61:10).** पौलुस इसी अनुभव के विषय इस प्रकार बताता है: **"सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्धारा परमेश्वर के साथ मेल रखें" (रोमियों 5:1).** यदि हमें उद्धार पाना है तो इस निर्णय और विश्वास के अनुभव को अनदेखा नहीं करना चाहिए. **"परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं" (यूहन्ना 1:12).**

घमण्ड

प्रिय मित्र, अपने सब पापों को यीशु के समक्ष रखने में घमण्ड को आड़े मत आने दीजिए. उसके साम्हने सब कुछ खोल दीजिए, कुछ भी मत रख छोड़िये! स्वर्गीय न्याय के दिन सब संत आप के खुले और गुप्त पापों को जानें इस से बेहतर है कि आप अभी अपने पापों को मान लीजिए, उस दिन वे लोग सभी दुष्टों की गुप्त बातों को जानेंगे और उनके नाश होने का कारण मालूम करेंगे **(प्रकाशितवाक्य 20:4)**. क्या आप इसे पसन्द करेंगे? आप जानते हैं कि यीशु के साम्हने अपने सब पापों को मान लेने से आप कुछ भी नहीं खोते हैं. ऐसा करने से आप सब कुछ पाते हैं. "**जो कोई मेरे पास आयेगा**", यीशु कहता है, **"उसे मैं कभी न निकालूंगा"(यूहन्ना 6:37)**. कोई भी पाप जिसका आप पूरे हृदय से पश्चाताप करते हैं, उसे क्षमा करना यीशु के लिए कठिन नहीं है. वह हमें क्षमा करने के लिए सदैव इच्छुक है. तौभी हमें स्वयं को दीन करके अपने पापों को स्वीकार करना आवश्यक है. यह अभी करें! इसे टालिये मत. अभी इसे पढ़ना बंद कर के, अपनी आँखे बंद करें और अपने जीवन का निरीक्षण करें. अपने हाथों को जोड़ कर यीशु को सब कुछ बता दीजिए. इसे बिना संदेह के पूरे विश्वास से करिये. आप छुटकारा और स्वतंत्रता–पाप की ज़ंजीरों से स्वतंत्रता प्राप्त करेंगे, क्योंकि ,**"सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करे, तो सच मुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे" (यूहन्ना 8:36)**. केवल यह करिये, अपना निर्णय अभी कीजिए! एक बार ऐसा करने पर यीशु कहेगा, **"मैं तुम्हें शांति दिये जाता हूँ, अपनी शांति तुम्हें देता हूँ ; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता" (यूहन्ना 14:27)**. हम सभी को इस शांति की आवश्यकता है! संसार यह शांति हमें नहीं दे सकता है केवल यीशु ही यह शांति हमें दे सकता है.

विश्वास का बपतिस्मा

लिखा है, **"जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले, उसी का उद्धार होगा" (मरकुस 16:16)**. बाइबल यह भी कहती है, **"सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है" (रोमियों 10:17)**. भले ही हम यीशु को देख नहीं पाते लेकिन हमें उस में विश्वास करना चाहिए, जिस ने हमारे काल निर्णय, ईसा पूर्व और ईस्वी सदी की शुरूआत की है. पूरी बाइबल का केन्द्र यीशु मसीह ही है. उद्धार केवल यीशु के द्वारा ही है. आज हम यीशु को भले ही देख न सकें लेकिन उसने स्वयं को परमेश्वर के वचन द्वारा प्रकट किया है. **"अब, विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है" (इब्रानियों 11:1)**. यह यीशु मसीह ही है जो हमें पापों से स्वतंत्र कर सकता है, और हमें उसी में विश्वास करना है. यीशु ने स्वयं कहा है, **"मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता"(यूहन्ना 14:6)**. और लिखा है, **"और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें" (प्रेरितों के काम 4:12)**. न बुद्ध, न मोहम्मद, और न ही पोप हमें बचा सकते हैं. ये सब ग़लती करने वाले प्राणी थे या हैं. केवल सृष्टिकर्ता यीशु मसीह जिस ने पाप रहित जीवन बिताया, विश्वास से उसके पास आने वालों का पूरा उद्धार कर सकता है. क्या आप इस बात पर विश्वास करते हैं? क्या आप यीशु मसीह पर पूरी रीति से विश्वास करने का फैसला करना चाहते हैं? और कीमत की परवाह किये बिना बाइबल में दिये गये, उसके प्रकाशनों और दस आज्ञाओं में पाये जाने वाले सुसमाचार का पालन करते हुए उसके पीछे चलना चाहते हैं ? यदि हाँ तो अगला कदम बपतिस्मे की तैयारी करना है. कार्य और विश्वास साथ–साथ चलते हैं. याकूब इसे इस प्रकार व्यक्त करता है, **"बरन कोई कह सकता है कि तुझे विश्वास है, और मैं कर्म करता हूँ: तू अपना विश्वास मुझे कर्म बिना तो दिखा; और मैं अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा तुझे दिखाऊंगा... निदान, जैसे, देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है" (याकूब 2:18–26)**. पौलुस इसे इस प्रकार लिखता है, **"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर का दान है. और न कर्मों के कारण ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे, क्योंकि हम उस के बनाये हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गये जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया" (इफिसियों 2:8+10)**. जो कोई यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार करता है उसके लिए यह उचित है कि वह अपने कार्यों द्वारा अपने विश्वास को प्रकट करे. बपतिस्मा उन में से एक है.

अपने बपतिस्मे से पूर्व आपको यह जानना आवश्यक है:

"बपतिस्मा" (Baptism) शब्द यूनानी भाषा के "बैपटिज़्मो" (Baptismo) शब्द से आता है, जो लोहार लोगों के काम–धंधे में प्रयोग किया जाता था. इस का अर्थ है कि आप किसी वस्तु को पानी में डुबोते हैं कि पानी उसे पूरी तरह से ढक ले. माना एक लोहार लोहे के एक टुकड़े को इच्छित आकार में ढाल कर उस लोहे की छड़ पर पानी रखना चाहता है. वह लोहे के इस गर्म टुकड़े को पानी में डालेगा कि पानी इसे पूरी रीति से ढक ले. इसी प्रकार बपतिस्मा पाने के इच्छुक व्यक्ति को भी पानी में "दफन" किया जाता है कि पानी उस व्यक्ति को पूरी तरह ढक लेता है. बपतिस्मा द्वारा आप यीशु की मृत्यु, दफन होने और जी उठने को स्वीकार करते और प्रतीक रूप में इस में स्वयं शामिल होना प्रगट करते हैं. और बपतिस्मा यह भी दिखाता है कि आप अपने पापपूर्ण जीवन को पानी में दफन करके एक नये जीवन की चाल चलने के लिए मसीह में जी उठते हैं. बपतिस्मा परमेश्वर की ओर अच्छे विवेक और मसीह से अच्छे सम्बंध होने का भी प्रमाण है. ये आयतें इन्हीं बातों का प्रमाण देती हैं: **"क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उस के साथ गाड़े गये, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नये जीवन की सी चाल चलें" (रोमियों 6:3–4)**. और **"उसी पानी का दृष्टांत भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है" (1 पतरस 3:21)**.

यदि आप को, प्रत्येक दिन के जीवन में किसी के साथ समझौते के अनुसार चलना है, तो यह सदैव महत्वपूर्ण है कि समझौते पर हस्ताक्षर करने से पूर्व समझौते की शर्तों को पढ़ लिया जाये. मसीही बपतिस्में में भी यही लागू होता है. बपतिस्में से पूर्व, आपको परमेश्वर के वचन को पढ़ने और समझने में पर्याप्त समय बिताना चाहिए, कि आप अपनी संधि के पहलुओं से परिचित हों जाऐं. यही कारण है कि हम इसे "विश्वास का बपतिस्मा" या "प्रौढ़ बपतिस्मा" कहते हैं. बपतिस्में से पहले आप को सोच विचार करके फैसला करना चाहिए– कि परमेश्वर आप को बदले. और आपको प्रार्थना करना चाहिए कि यीशु के पीछे चलने के लिए आपको आवश्यक सामर्थ प्राप्त हो सके **(1 पतरस 2:21)**. बपतिस्मा आंतरिक परिवर्तन का बाहरी चिन्ह होना चाहिए.

नवजात शिशुओं का "बपतिस्मा"

जैसा कि हम पहले ही सीख चुके हैं कि विश्वास करने से पूर्व किसी को भी बपतिस्मा नहीं दिया जाना चाहिए. एक मासूम बच्चा जिसने पुरोहित से पानी की कुछ बूंदे अपने सिर पर छिड़क कर प्राप्त की हैं, बाइबल के अनुसार उस का बपतिस्मा नहीं हुआ है. अभी तक उसे अच्छे और बुरे की कोई पहिचान नहीं है **(इब्रानियों 5:13–14)**. इसे तो अभी यह सीखना है कि यीशु मसीह पापों से किस प्रकार बचाता है. यहां, इसका यीशु में कोई व्यक्तिगत विश्वास नहीं है. चूंकि बाइबल कहती है कि, **"जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा" (मरकुस 16:16)**. **"और विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है"(रोमियों 10:17)**. बपतिस्मा तभी दिया जाना चाहिए जब कि व्यक्ति के मसीह यीशु में विश्वास को प्रश्नों द्वारा जान लिया गया है. इस प्रकार बच्चों पर पानी छिड़कना बपतिस्मा नहीं बल्कि मनुष्य निर्मित एक रीति है जो भली दिखाई देती है. इसी कारण वे सब विश्वासी, जिन्होंने पानी का छिड़काव "नवजात बपतिस्मा" लिया है, उन्हें बाइबल के अनुसार बपतिस्मा लेना चाहिए.

दृढ़ीकरण या कन्फर्मेशन

कैथोलिक चर्च ने कन्फर्मेशन का चलन 13वीं शताब्दी में आरम्भ किया. यह एक सर्वविदित सच्चाई है, कि कन्फर्मेशन लेने वाले बहुत कम ऐसे होते हैं, जो यीशु मसीह में व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करते हैं. यह दिखाता है कि ऐसा संस्कार एक असफल संस्कार है. इसके अतिरिक्त यीशु ने अपने विदाई संदेश में अपने चेलों से कहा, कि उन्हें वह सब प्रचार करना चाहिए जो उसने उन्हें आज्ञा दी थी **(मत्ती 28:18–20)**. और "नवजात शिशुओं का बपतिस्मा" या कन्फर्मेशन यीशु की शिक्षाओं में शामिल नहीं है. ये तो ऐसी शिक्षाएं हैं जो बाइबल में नहीं पाई जाती हैं.

बपतिस्मे के कुछ उदाहरण

बाइबल में बपतिस्मे के अनेक उदाहरण हैं. जब फिलिप्पुस ने यीशु का सुसमाचार इथोपियन खोजे को सुनाया तो खोजे ने फिलिप्पुस से कहा : **"देख यहाँ जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है ? फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है : उसने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है. तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया"** (प्रेरितों के काम 8:36-38). जब फिलिप्पुस ने सामरिया में सुसमाचार सुनाया, बहुतों से सन्देश स्वीकार किया. फिलिप्पुस के प्रचार का परिणाम बाइबल बताती है: **"परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था, तो लोग क्या पुरूष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे"** (प्रेरितों के काम 8:12).
पिन्तेकुस्त के बाद, पतरस और अन्य प्रेरित यह प्रचार करते हुए दिखाई दिये : **"सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी. तब सुनने वालों के हृदय छिद गये, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाइयो, हम क्या करें ? पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे" (प्रेरितों के काम 2:36-38)**. जब जंगल में यूहन्ना बपतिस्मा दाता प्रकट हुआ तो उसने ऊँची आवाज़ में लोगों से कहा: **"मन फिराओ; क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है... और अपने अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया" (मत्ती 3:1-6)**. हम देख सकते हैं कि बपतिस्मे से पहिले आप अपने पापों को मानते और पश्चाताप करते हैं. और यीशु मसीह को विश्वास से एक व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं. बाइबल बताती है कि **"एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा" (इफिसियों 4:5)**. इस प्रकार बाइबल वाला बपतिस्मा "विश्वास का बपतिस्मा" है. जिसमें विश्वासी जल रूपी कब्र में दफन होता है और यीशु मसीह में एक नये जीवन के साथ जी उठता है. यदि आपने अभी तक बाइबल के अनुसार बपतिस्मा नहीं लिया है तो आपको यीशु के पद चिन्हों पर चलना चाहिए. उसने यरदन नदी में बपतिस्मा लिया था. जबकि उसे ऐसा करने की आवश्यकता नहीं थी. लेकिन उसने ऐसा हमारे लिये एक उदाहरण देने के लिए किया कि हम भी उसके पद चिन्हों पर चलें **(मत्ती 3:1-17 और 1 पतरस 2:21)**.

प्रिय मित्र, बाइबल स्पष्ट बताती है कि यीशु का बपतिस्मा-बाइबल आधारित बपतिस्मा," विश्वास का बपतिस्मा" है. यह बहुत महत्वपूर्ण है. लिखा है: **"जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा" (मरकुस 16:16)**. एक बार यीशु का विश्वास-ऐसा विश्वास जो यीशु में था, स्वीकार करने के बाद हम बपतिस्मे के लिए तैयार हो जाते हैं. **याकूब 4:17** में बाइबल कहती है: **"इसलिए जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है."** यह बपतिस्मे के सम्बंध में भी सत्य है. यदि आप विश्वास के बपतिस्मे को बाइबल आधारित बपतिस्मा मान कर सही ठहराते हैं और अभी तक यह बपतिस्मा नहीं पाया है तो आपको ऐसे पास्टर या प्रचारक से संपर्क करना चाहिए जो यीशु के विश्वास का प्रचार करता है, ताकि आप विश्वास का बपतिस्मा प्राप्त कर सकें. यीशु ने नीकुदेमुस से विचारोत्तेजक शब्द कहे: **"मैं तुझ से सच सच कहता हूँ; यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता" (यूहन्ना 3:3-6)**. यह कहानी हमें यही बताती है कि पवित्र आत्मा, यीशु को स्वीकार करने और उसके पीछे चलने के लिए निरन्तर हमें पुकारता है.
यीशु इसे इस प्रकार समझाता है: **"हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहाँ से आती है और किधर को जाती है, जो कोई आत्मा से जन्मा है, वह ऐसा ही है" (यूहन्ना 3:8)**.

मनुष्य के हृदय पर पवित्र आत्मा के कार्य की तुलना हवा से की जा सकती है, जो दिखाई नहीं देती लेकिन उसका असर साफ नज़र आता है. नया जीवन देने वाली शक्ति को कोई व्यक्ति देख नहीं सकता, लेकिन यह आत्मा को एक नया जीवन देती है और परमेश्वर की समानता में एक नये मनुष्य का निर्माण करती है. आइए अपने जीवन में परमेश्वर की सामर्थ पाने के लिए अपना जीवन खोल दें, तब हमारे जीवन पूरी तरह बदल जायेंगे. फिर हम शासक के स्थान पर सेवक और बेदर्द के स्थान पर दयालु बन जायेंगे. हम घृणा करने के स्थान पर प्रेम करेंगे. हम झगड़ालू के स्थान पर मित्रवत् हो जायेंगे. पवित्र आत्मा ऐसा ही है, वह हमारे जीवन में परमेश्वर की सुइच्छानुसार इच्छा और काम दोनों बातों के करने का प्रभाव डालता है **(फिलिप्पियों 2:13)**. प्रिय मित्र, पवित्र आत्मा का विरोध मत कीजिए, बल्कि उसे अपने जीवन में आने के लिए आमन्त्रित कीजिये. फिर सभी पहिचान लेंगे कि कुछ मौलिक, कुछ अद्भुत् आपके जीवन में घट चुका है. इसी प्रकार हम यीशु के लिए एक भले गवाह बनते हैं.

मसीह में जीवन बिताना

एक बार मसीह का अनुशरण करने का फैसला करने, और बाइबल आधारित बपतिस्मा लेने के बाद, हमें मसीह में और उसके साथ जीवन बिताना है. यहाँ पर एक बात नोट करने योग्य है कि हमारा एक शत्रु है, शैतान जो ग़लत काम करने के लिए प्रलोभन देता है. यदि यीशु के साथ हमारा सम्बंध मज़बूत नहीं है, तो हम परीक्षा में गिर जायेंगे. याकूब इस विषय में कहता है: **"धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है;, क्योंकि वह खरा निकल कर जीवन का वह मुकुट पायेगा, जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों को दी है. जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे, कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है. परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फंसकर परीक्षा में पड़ता है. फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है"** (याकूब 1:12-15).

पूर्व में हमने शरीर और आत्मा के बीच संघर्ष के विषय में लिखा. शरीर हमारा ही भाग है. शैतान हमारी इंद्रियों द्वारा हमें प्रलोभन देता है. लेकिन हमें शरीर को हमारे ऊपर शासन नहीं करने देना है. हमें परमेश्वर की आवाज़, उसकी सम्मति और उसका मार्गदर्शन प्राप्त करना है. सृष्टिकर्ता जानता है कि उसके सृजित प्राणियों के लिए क्या सर्वोत्तम है और उसकी आज्ञाओं की रचना ही परमेश्वर और दूसरे मनुष्यों के साथ हमारी प्रसन्नता के लिए की गई थी. ये दस संक्षिप्त आज्ञाएं जो **निर्गमन 20:3-17** में पाई जाती हैं, हम सब को रट लेना चाहिए. जब हम परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुरूप होते हैं, तो हम उसके अनुरूप होते हैं जिसने इन आज्ञाओं को हमारे लिए रचा है.

स्वयं के विरूद्ध युद्ध युगों-युगों की सबसे बड़ी लड़ाई है. आत्मसमर्पण, परमेश्वर की इच्छा का पूरी तरह पालन करने का फैसला करना, मन की सच्ची दीनता धारण करना, और प्रेम, और मित्रता, जैसे भले "फल" प्रकट करना एक कार्य है जो हम स्वयं से नहीं कर सकते हैं. लेकिन अपने जीवन में परमेश्वर की सामर्थ द्वारा हम इस क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं. मसीह का चरित्र और उसका पवित्र जीवन इस बात का सफल उदाहरण है कि हम स्वयं पर कैसे जयवंत हो सकते हैं. उसके पिता में उसके अडिग भरोसे की कोई सीमा नहीं थी. उसकी आज्ञाकारिता और समर्पण बिना शर्त और सम्पूर्ण था. वह सेवा कराने नहीं किन्तु दूसरों की सेवा करने आया था. वह अपनी इच्छा नहीं किन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने आया था. प्रत्येक बात में उसने स्वयं को उसके समक्ष दीन किया जिसका न्याय सच्चा है. यीशु ने कहा, **"मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता" (यूहन्ना 5:30).** परमेश्वर सब कुछ कर सकता है और अपने सेवकों को उनकी आवश्यकता अनुसार पूरी सामर्थ और प्रत्येक स्थिति के लिए आवश्यक बुद्धि देना चाहता है. जो उसमें भरोसा रखते हैं, परमेश्वर उनकी बड़ी से बड़ी अपेक्षा पूरी करेगा.

अब हम मसीही प्रगति को दिखाने के लिए कुछ प्राकृतिक उदाहरण प्रस्तुत करेंगे : जब आप भूमि में एक बीज बोते हैं, यदि उस बीज को पर्याप्त पानी, ऊर्जा और धूप मिलती रहे तो उसमें एक निरन्तर वृद्धि होती है. बीज का उगना आत्मिक जीवन के आरम्भ, और पौधे का बढ़ना एक मसीही की आत्मिक वृद्धि की खूबसूरत तस्वीर पेश करता है. मसीही जीवन प्रकृति की वस्तुओं से मेल खाता है: वृद्धि बिना जीवन असम्भव है. एक पेड़ या तो बढ़ेगा या फिर सूख जायेगा. जैसे एक पेड़ चुप चाप बढ़ता है वैसे ही आप का मसीही जीवन भी विकास करता है. आपके जीवन की आत्मिक वृद्धि का प्रत्येक कदम सिद्ध हो सकता है; परमेश्वर की योजना को सफल करने के लिए, हमें निरन्तर प्रगति करनी ही होगी. पवित्रीकरण जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है. प्रत्येक अवसर से हम अनुभव प्राप्त करेंगे और ज्ञान में बढ़ेंगे. हम दायित्वों को उठाने के लिए सामर्थ प्राप्त करेंगे. और अपने हाथों द्वारा किये गये कार्यों से परिपक्वता प्राप्त करेंगे. अब हम और आगे की मसीही प्रगति को अपना लक्ष्य बनायेंगे. एक पेड़ के समान आप निरन्तर बढ़ते और विकास करते हैं. एक पेड़ परमेश्वर द्वारा प्रदान किये गये पोषक तत्वों को ग्रहण करने के द्वारा बढ़ता है. इसकी जड़ें नीचे भूमि में जाती हैं. धूप इस पर चमकती है. और ओस और बरसात से ताज़गी प्राप्त होती है. यह हवा से जीवनदायी तत्वों को लेता है. वास्तव में एक मसीही को भी परमेश्वर के सहयोग से ऐसे ही बढ़ना चाहिए. अपनी असमर्थता का ऐहसास करते हुए हमें प्राप्त प्रत्येक सुअवसर का उपयोग करते हुए हमें एक गहरे अनुभव को प्राप्त करना चाहिए. जैसे एक पेड़ अपनी जड़ों द्वारा भूमि में पकड़ बनाता है, हमें भी मसीह में जड़ पकड़ते जाना है. जैसे एक पेड़ धूप, ओस और बरसात प्राप्त करता है, हमें भी अपने मनों में पवित्र आत्मा प्राप्त करना है. बाइबल यीशु के बचपन और प्रौढ़ावस्था का वर्णन मात्र कुछ शब्दों में करती है : **"और बालक बढ़ता, और बलवंत होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया, और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था... और यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया" (लूका 2:40+52).** बुद्धिमान सुलेमान बुद्धि के विषय में कहता है: **"हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे, और मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय में रख छोड़े, और बुद्धि की बात ध्यान से सुने, और समझ की बात मन लगाकर सोचे; और प्रवीणता और समझ के लिए अतियत्न से पुकारे, और उसको चाँदी की नाईं ढूंढ़े, और गुप्त धन के समान उस की खोज में लगा रहे; तो तू यहोवा के भय को समझेगा, और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा क्योंकि बुद्धि यहोवा ही देता है; ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुंह से निकलती हैं" (नीतिवचन 2:1-6).** यीशु ने अपनी बुद्धि परमेश्वर के वचन से प्राप्त की, हमें भी प्रतिदिन परमेश्वर को खोजने, प्रार्थना और उसके वचन के अध्ययन के लिए समय निकालना चाहिए. इस से परमेश्वर के विषय हमारा ज्ञान बढ़ेगा. जिस से हमारे मसीही जीवन में बड़ी सहायता प्राप्त होगी. बाइबल में हमें मसीह में बने रहने के लिए एक शानदार चित्रण मिलता है. यीशु के शब्दों में: **"तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते. मैं दाखलता हूँ: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते" (यूहन्ना 15:4-5).**

ठीक जिस प्रकार तने से अलग होने पर एक डाली न तो बढ़ सकती है और न ही फल सकती है, उसी प्रकार मसीह के बिना हम भी परमेश्वर में जीवन नहीं जी सकते हैं. हम जानते हैं, कि कटी हुई डाली का भाग्य मृत्यु ही है. यदि हमारा मसीह से निरन्तर सम्पर्क बना न रहे तो यही हाल हमारा भी होगा- हमारा आत्मिक जीवन समाप्त हो जायेगा. एक बार आत्मिक रूप से मृत्यु होने से हम प्रलोभन से बचने या अनुग्रह और पवित्रता में बढ़ने की सामर्थ खो देंगे. तौभी, जब हम मसीह में बने रहते, हम फूलते-फलते और प्रसन्न रहते हैं. यदि हम उस से पोषण प्राप्त करेंगे, तो हम न तो सूखेंगे और न ही फलरहित रहेंगे लेकिन बहती नालियों के किनारे लगे वृक्षों के समान हरे-भरे रहेंगे. अनेक लोग आरम्भ में यीशु मसीह द्वारा उद्धार को स्वीकार कर लेते हैं और फिर वे अपनी ही सामर्थ से धार्मिकता का जीवन बिताने का प्रयास करते हैं. ऐसा कोई भी प्रयास व्यर्थ ही जायेगा. अभी कुछ ही पल पहले हम ने यीशु के मुंह से निकले शब्दों को पढ़ा था: **"मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते."**

अनुग्रह में हमारी वृद्धि, हमारी प्रसन्नता, और वे भले कार्य जो हम कर सकते हैं, मसीह से हमारे सम्बंध पर निर्भर हैं. यह तो मसीह से प्रतिदिन, प्रति घण्टा बल्कि प्रति सेकेण्ड बात चीत करते रहने और उसमें बने रहने से ही हम अनुग्रह में बढ़ सकते हैं. यीशु मसीह केवल सुबह को ही हमारे विचारों में नहीं होना चाहिए, परन्तु हमारे प्रत्येक विचार में उसे ही रहना चाहिए. फिर हम एक बीज के समान बढ़ते हुए अन्ततः एक पके हुए दाने के समान बढ़कर यीशु के पुनः आगमन पर लवने के लिए तैयार पाये जायेंगे **(प्रकाशितवाक्य 14:13-15; 1 थिस्सलुनीकियों 4:15-17).** शायद आप पूछेंगे, "मैं मसीह में कैसे बना रह सकता हूँ ?" उसी प्रकार जैसे आप ने उसे स्वीकार किया था. बाइबल कहती है, **"सो जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु कर के ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसी में चलते रहो" (कुलुस्सियों 2:6). "मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा" (इब्रानियों 10:38).** आप ने, परमेश्वर का जन होने, उस की सेवा करने, और उसकी आज्ञा पालन करने के लिए स्वयं को पूरी तरह अर्पित कर दिया है, और उसे अपना उद्धारकर्ता स्वीकार किया है. आप अपने पापों के लिए प्रायश्चित्त करने, या अपने विचारों और हृदय को बदलने में असमर्थ थे, यीशु ने यह आप के लिए किया और आप ने विश्वास से इसे स्वीकार किया. विश्वास ही से आप मसीह की सम्पत्ति बने, और विश्वास ही से प्राप्त करते हुए और बाँटते हुए आपको उसमें बढ़ना है. आपको अपना सब कुछ अर्पण करना होगा. आपका दिल, आपकी इच्छा, आपकी नौकरी, और सब कुछ समर्पित करके आपको परमेश्वर की इच्छा और उसकी आज्ञाओं का पालन करना है. इसी प्रकार आप सब कुछ प्राप्त करते हैं- मसीह को प्राप्त करते हैं जो सब आशीषों का सोता है. उसे अपने दिल में रहने दें जिस से वह आपकी सामर्थ, आपकी धार्मिकता, आपका अनन्त मद्दगार बन सके, कि आपको आज्ञाकारिता का जीवन जीने के लिए सामर्थ प्राप्त हो सके. यीशु कहता है, **"यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे" (यूहन्ना 14:15).** यूहन्ना, प्रभु का प्रिय प्रेरित इस बात को इस प्रकार कहता है, **"जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम जानते हैं, कि परमेश्वर की संतानों से प्रेम रखते हैं. और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं को मानें: और उसकी आज्ञाऐं कठिन नहीं" (1 यूहन्ना 5:2-3).** बहुत हैं जो यह दावा करते हैं, कि यह "व्यवस्था की गुलामी का प्रचार है" या "व्यवस्था द्वारा उद्धार" पाने का प्रयास है. लेकिन यह तो बाइबल के अनुसार प्रचार है. यदि हम मसीह से अलग होकर-अपनी ही शक्ति से परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का प्रयास करें तो इसे व्यवस्था की गुलामी या व्यवस्था पालन द्वारा उद्धार प्राप्त करने का प्रयास कहा जा सकता है. जब हम यह ऐहसास करते हैं कि हमें बचाने के लिए यीशु ने कितनी बड़ी कीमत चुकाई है तो हम दस साधारण आज्ञाओं का पालन करेंगे; जो परमेश्वर ने इसलिए निर्धारित की हैं कि हमारा, परमेश्वर और मनुष्य दोनों के साथ एक सिद्ध सम्बंध बना रहे. हम इनका पालन अपनी क्षमता से तो नहीं कर सकते, लेकिन पवित्र आत्मा हमारे जीवन में एक बार आने के बाद, हमें **निर्गमन 20:3-17** में दी गईं परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करने के लिए आवश्यक सम्पूर्ण सामर्थ प्राप्त हो जाती है. क्या आप इस बात पर विश्वास करते हैं ?

क्या आप विश्वास करते हैं कि यीशु, शैतान से अधिक सामर्थी है? क्या आप विश्वास करते हैं कि जब यीशु कहता है, **"कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है" (मत्ती 28:18),** वह कुछ सामर्थ अपने लोगों को भी देगा? स्वर्ग पर उठाये जाने से कुछ देर पहले यीशु ने अपने चेलों से कहा: **"परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे" (प्रेरितों के काम 1:8).** पौलुस इस बात को इस प्रकार कहता है, **"तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है: और परमेश्वर सच्चा है: वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, बरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको" (1 कुरिन्थियों 10:13).** पतरस और प्रेरितों ने कहा, **"और हम इन बातों के गवाह हैं, और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उसकी आज्ञा मानते हैं" (प्रेरितों के काम 5:32).** पर्वतीय उपदेश में यीशु ने कहा, **"जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है" (मत्ती 7:21).** इस के अतिरिक्त, **"और सिद्ध बन कर, अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया" (इब्रानियों 5:9).**

ये आयतें हमें बताती हैं कि परमेश्वर ने उन्हें पवित्र आत्मा देने की प्रतिज्ञा की है जो उसकी आज्ञा मानते और उसकी इच्छानुसार आचरण करते हैं, और यह परमेश्वर ही तय करता है कि वह पवित्र आत्मा किस को देगा! कल्पना करें, परमेश्वर के साथ सहयोग करने वालों के लिए कितनी बड़ी सामर्थ का स्रोत उपलब्ध है! पिन्तेकुस्त के दिन, चेलों ने पवित्र आत्मा की असाधारण मात्रा का अनुभव किया. उन्होंने सुसमाचार का बड़ी सामर्थ से प्रचार किया और परमेश्वर का कार्य बड़ी सामर्थ से आगे बढ़ता गया. इन अन्तिम दिनों में, परमेश्वर के लोग पुनः पवित्र आत्मा को बड़ी मात्रा में प्राप्त करेंगे. तब तीन स्वर्गदूतों का संदेश, विशेषकर तीसरे **(प्रकाशितवाक्य 14:12)** स्वर्गदूत के संदेश का प्रचार किया जायेगा, कि **"बाबुल में से निकल आओ" (प्रकाशितवाक्य 18:4).** "पवित्र आत्मा की अन्तिम बरसात" प्राप्त करने के लिए हमें अभी तैयारी करनी है, अभी हमें स्वयं को परमेश्वर के सामने दीन करना, अपने पापों को स्वीकार करना, और स्वयं को पूरी रीति से यीशु के पक्ष में कर के इस विशेष आशीष को प्राप्त करना और समापन कार्य में भाग लेना है. यदि हम यीशु के पीछे सम्पूर्ण रीति से चलने का फैसला नहीं करते तो पवित्र आत्मा हमारे आस-पास के लोगों पर आ सकता है, किन्तु हमारे ऊपर नहीं.

इस से पहले हम ने सीखा कि यीशु धर्मी है और वे सब जो यीशु मसीह में विश्वास करते हुए उसे अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करते हैं, उसके कारण धर्मी गिने जायेंगे. किन्तु, हमने यह भी देखा कि पवित्र आत्मा की सामर्थ से हम धार्मिकता का जीवन बितायेंगे, अब हम इस सम्बंध में कुछ और आयतें पढ़ेंगे. पतरस ने इसे इस प्रकार कहा: **"...बरन हर जाति में जो उससे डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है," (प्रेरितों के काम 10:35).** आगे बाइबल में पौलुस इस सत्य को पुनः समझाता है. **"क्योंकि परमेश्वर के यहाँ व्यवस्था के सुनने वाले धर्मी नहीं ; पर व्यवस्था पर चलने वाले धर्मी ठहराये जायेंगे" (रोमियों 2:13).** यूहन्ना यह कहता है: **"यदि तुम जानते हो, कि वह धार्मिक है, तो यह भी जानते हो, कि जो कोई धर्म का काम करता है, वह उससे जन्मा है" (1 यूहन्ना 2:29).** कुछ पदों के बादः **"हे बालको, किसी के भरमाने में न आना; जो धर्म के काम करता है, वही उसकी नाईं धर्मी है" (1 यूहन्ना 3:7).** यीशु ने नीकुदेमुस से कहा: **"जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता" (यूहन्ना 3:5).**

पवित्र आत्मा ही है जो धार्मिकता का जीवन जीने में हमारी मद्द करता है और इसमें हमारे घमण्ड के लिए कोई स्थान नहीं होता. ऐसी अनमोल मद्द के लिए परमेश्वर की बड़ाई हो! यीशु की धार्मिकता जिसके हम योग्य नहीं हैं, किन्तु विश्वास के द्वारा अनुग्रह से प्राप्त होती है, प्राप्त किये बिना हम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते. यीशु की धार्मिकता स्वीकार करने के परिणाम स्वरूप पवित्र आत्मा हमारे अन्दर निवास करते हुए, धार्मिकता का जीवन जीने में हमारी मद्द करता है. वह परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में हमारी मद्द करता है. बाइबल की अन्तिम आयतों में से एक आयत यह कहती है: **"धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं,"** (अंग्रेजी बाइबल में-**"जो आज्ञा पालन करते हैं"**) **क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे" (प्रकाशितवाक्य 22:14).**

ये आयतें अपनी व्याख्या स्वयं ही करती हैं. आपका विश्वास आपके कार्यों में नज़र आयेगा. इस सम्बंध में याकूब कहता है, **"निदान, जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है" (याकूब 2:26).**

यीशु के दूसरे आगमन से ठीक पहले उद्धार पाने वाले लोगों के विषय यह कहा गया है, **"ये वे हैं, जो उस बड़े क्लेश में से निकल कर आये हैं; इन्होंने अपने-अपने वस्त्र मेम्ने (मसीह) के लोहू में धो कर श्वेत किये हैं" (प्रकाशितवाक्य 7:14).** इसके अलावा, **"आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें; क्योंकि मेम्ने का ब्याह आ पहुँचा है और उसकी पत्नी ने अपने आप को तैयार कर लिया है. और उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया, क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम हैं" (प्रकाशितवाक्य 19:7-8).**

जब यूहन्ना ने मन फिराव और बपतिस्मा का प्रचार किया, उसने उनसे कहा जो सोचते थे कि परमेश्वर से उन्हें बड़ी बुद्धि प्राप्त थी. **"सो मन फिराव के योग्य फल लाओ" (मत्ती 3:8).** यीशु चाहता है कि हम केवल वचन के सुनने वाले ही न बनें बल्कि उस पर चलने वाले भी बनें **(याकूब 1:22).** हमारे जीवन में पवित्र आत्मा होने के कारण ही हम प्रिय, मित्रवत्, सभ्य, मद्दगार, धन्यवादी, और दयालु बनने की सामर्थ प्राप्त करते हैं. पवित्र आत्मा का फल हमारे जीवन में दिखाई देगा और हमारा चरित्र यीशु के समान बनायेगा. चरित्र में हम प्रतिदिन यीशु के समान बनते जायेंगे. फिर हम पवित्रता के मार्ग में चलेंगे. और यीशु ने हमें उदाहरण दे दिया है कि हमें किस प्रकार उसका अनुशरण करना चाहिए **(1 पतरस 2:21).** मसीह हमसे बड़ी अपेक्षा रखता है, किन्तु केवल उसी की सामर्थ से ही हम धीरे-धीरे उसके समान बन सकते हैं. हम अपने दायरे में सिद्ध हो सकते हैं, फिर भी वृद्धि के लिए काफी सम्भावनाएं हैं **(मत्ती 5:48).**

पतरस इसे इस प्रकार कहता है. **"और आज्ञाकारी बालकों की नाईं अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश्य न बनो, पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो, क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ" (1 पतरस 1:14-16).**

इस्राइली जब प्रतिज्ञा के देश कनान में प्रवेश करने ही वाले थे, यहोशू ने लोगों से कहा **"तुम अपने आपको पवित्र करो; क्योंकि कल के दिन यहोवा तुम्हारे मध्य में आश्चर्यकर्म करेगा" (यहोशू 3:5).** समय के चिन्ह स्पष्ट बताते हैं कि जगत का उद्धारकर्ता यीशु मसीह अतिशीघ्र पुनः आने वाला है. हम स्वर्गीय कनान की सीमाओं पर पहुंच चुके हैं, और हमें राजाओं के राजा, और प्रभुओं के प्रभु से मिलने के लिए स्वयं को पवित्र करने की अतिआवश्यकता है. हम स्वयं को पवित्र नहीं कर सकते, लेकिन, प्रतिदिन परमेश्वर के सामने समर्पण करने, और हमारे जीवन में पवित्र आत्मा की मद्द से परमेश्वर की इच्छानुसार जीवन बिताने की शक्ति प्राप्त करते हैं. और हम परमेश्वर के लिए पवित्र होते जाते हैं. स्पष्ट है कि परमेश्वर का दर्शन करने के लिए हमारा हृदय शुद्ध होना चाहिए. पतरस लिखता है: **"पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं, जिन में धार्मिकता बास करेगी. इसलिए, हे प्रियो, जबकि तुम इन बातों की आस देखते हो तो यत्न करो कि तुम शांति से उस के साम्हने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो" (2 पतरस 3:13-14).** अपने पर्वतीय उपदेश में यीशु ने कहा, **"धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे" (मत्ती 5:8).**

लेकिन, यीशु के वापस आने से पहले हमें एक संघर्ष से होकर गुजरना होगा. निश्चय ही हम एक युद्ध, एक आत्मिक युद्ध में संघर्षरत योद्धा हैं. यह युद्ध शरीर और आत्मा; और परमेश्वर और शैतान के बीच चल रहा है. मनोवैज्ञानिक और आत्मिक संघर्ष इस बात का स्पष्ट प्रमाण है. बाइबल इस आमने-सामने के संघर्ष का वर्णन इस प्रकार करती है :

1... **"क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते-फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते. क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं : सो हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊँची बात को, जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है; खण्डन करते हैं, और हर एक भावना को क़ैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं." (2 कुरिन्थियों 10:3-5).** 2..."**परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको. क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अंधकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं. इसलिए परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो, कि तुम बुरे दिन में साम्हना कर सको, और सब कुछ पूरा कर के स्थिर रह सको. सो सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता की झिलम पहिनकर, और पावों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर. और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिस से तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको. और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो. और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो, और इसीलिए जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार बिनती किया करो" (इफिसियों 6:11-18).**

3... **"और अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी शेष संतान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया" (प्रकाशितवाक्य 12:17).** (यहाँ पर "स्त्री" परमेश्वर के लोगों / उसकी कलीसिया या यीशु के अनुयाइयों का प्रतीक है -**2 कुरिन्थियों 11:2**).

4... अन्त समय में, परमेश्वर के लोगों, जिन्हें दूसरों के समान "पशु की छाप" लेने के लिए विवश किया जायेगा, उनकी पहिचान यह होगी. **"पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं" (प्रकाशितवाक्य 14:12).**

5... बाइबल की अन्तिम पुस्तक प्रकाशितवाक्य में, यूहन्ना ने दर्शन में लोगों की एक विजयी भीड़ देखी जो यीशु के पुनः आगमन के समय पाये जायेंगे. वे परमेश्वर के राज्य में इकत्र किये गये.

उन्होंने संघर्ष कर "पशु", "पशु की मूरत" और "पशु की छाप" और उसके "नाम के अंक" पर जय पायी थी. बाइबल कहती है, **"और मैंने आग से मिले हुए काँच का सा एक समुद्र देखा, और जो उस पशु पर, और उस की मूरत पर, और उसके नाम के अंक पर जयवंत हुए थे, उन्हें उस कांच के समुद्र के निकट परमेश्वर की वीणाओं को लिये हुए खड़े देखा" (प्रकाशितवाक्य 15:2).**

6... बाइबल अन्ततः विजयी जन समूह की पहिचान का वर्णन इस प्रकार करती है, **"फिर मैंने दृष्टि की, और देखो, वह मेम्ना सिय्योन पहाड़ पर खड़ा है और उस के साथ एक लाख चौआलीस हज़ार जन हैं, जिनके माथे पर उसका और उसके पिता का नाम लिखा हुआ है. और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, जो जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन का सा शब्द था, और जो शब्द मैंने सुना; वह ऐसा था मानो वीणा बजाने वाले वीणा बजाते हों. और वे सिंहासन के साम्हने और चारों प्राणियों और प्राचीनों के साम्हने मानो, एक नया गीत गा रहे थे, और उन एक लाख चौआलीस हज़ार जनों को छोड़ जो पृथ्वी पर से मोल लिये गये थे, कोई वह गीत न सीख सकता था. ये वे हैं, जो स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए, पर कुंआरे हैं, ये वे ही हैं, कि जहाँ कहीं मेम्ना जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैं: यह तो परमेश्वर के निमित्त पहिले फल होने के लिए मनुष्यों में से मोल लिये गये हैं. और उनके मुहं से कभी झूठ न निकला था, वे निर्दोष हैं" (प्रकाशितवाक्य 14:1-5).**

स्पष्टहै कि परमेश्वर की संतानों में से "शेष संतान" (बकिया लोग) उद्धार पायेंगे **(यशायाह 10:20-22; मीका 2:12; प्रकाशितवाक्य 12:17; रोमियों 9:27; 11:5).** बाइबल इस प्रकार बताती है कि, **"जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं"** वे ही इस पवित्र झुण्ड में होंगे **(प्रकाशितवाक्य 14:12).** सो हृदय को जांचने वाला प्रश्न यह है: परमेश्वर के अनुग्रह और उसकी सहायता से क्या आप परमेश्वर की आज्ञाओं को मानेंगे, और यीशु पर विश्वास रखेंगे ? उद्धार एक व्यक्तिगत मामला है, हम समूहों या कलीसियाओं के साथ नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप से ही या तो उद्धार पायेंगे या फिर नाश होंगे. यदि आपने अभी तक अपना जीवन पूरी तरह से यीशु को नहीं दिया है तो यीशु का निमंत्रण आपको बुला रहा है: **"देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आ कर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ. जो जय पाये, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसा मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया" (प्रकाशितवाक्य 3:20-21).** यीशु जयवंत हुआ है. हम भी उस उद्धार को स्वीकार करके, जो उसने हमारे लिए तैयार किया है, जयवंत हो सकते हैं. इस दान को स्वीकार करने का निर्णय अभी कीजिए! आज ही उद्धार और अनुग्रह का दिन है! हम नहीं जानते कि हमारे साथ कल क्या होगा. आज ही उद्धार का दिन है. पाप की ज़ंजीरों से स्वतंत्र होने के लिए यीशु के निमंत्रण को हम जितना अधिक टालेंगे, यीशु के लिए स्थिर खड़े रहना हमारे लिए उतना ही कठिन हो जायेगा. इसलिए पौलुस का आप से यह निवेदन है; **"अब क्यों देर करता है ? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल" (प्रेरितों के काम 22:16).**

अन्तिम आत्मिक संघर्ष का वर्णन अरमगदौन के अधीन आता है. प्रकाशितवाक्य की पुस्तक सम्बंधित योद्धाओं का स्पष्ट वर्णन करती है. पृथ्वी भर की सभी भ्रष्ट शक्तियां- अजगर, पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता एक ओर, और यीशु और उसकी धार्मिकता की पोशाक पहने हुए धर्मी लोग दूसरी ओर होंगे **(प्रकाशितवाक्य 16:12-16).** यही चित्रण हमें अगले अध्याय में भी मिलता है. वहां पृथ्वी की सभी भ्रष्ट शक्तियां जो **निर्गमन 20:3-17** में पाई जाने वाली 10 आज्ञाओं का विरोध करती हैं, मसीह और उसके साथ जुड़े हुए लोगों से संघर्ष करेंगी **(प्रकाशितवाक्य 17:14).**

प्रभु करे कि आप और हम मेम्ने (मसीह) का अनुशरण करते हुए उस के पीछे-पीछे चलें जहाँ कहीं वह जाये. इसका अर्थ यह हुआ कि हम लोग सभी युगों के उद्धार पाये हुए लोगों के साथ जगत के उद्धारकर्ता यीशु मसीह को स्वर्ग के बादलों पर आते हुए देखेंगे **(यूहन्ना 14:1-3; प्रकाशितवाक्य 1:7; 1 थिस्सलुनीकियों 4:15-17 और 1 कुरिन्थियों 15:51-54).** फिर हम अपने हाथ अपने उद्धारकर्ता की ओर उठा कर कहेंगे, **"देखो, हमारा परमेश्वर यही है; हम इसी की बाट जोहते आये हैं, कि वह हमारा उद्धार करे. यहोवा यही है; हम उस की बाट जोहते आये हैं. हम उस से उद्धार पाकर मगन और आनन्दित होंगे" (यशायाह 25:9).**

एक सक्रिय गवाह बनें!

एक बार हम यह ऐहसास करलें कि यीशु ने हमें बचाने के लिए क्या किया है, और मसीह में भरपूर जीवन का अनुभव करलें तो हम अपनी प्रसन्नता और शुभ संदेश दूसरों के साथ बांटने की इच्छा अवश्य करेंगे. कोई भी सच्चा मसीही इस विषय में शांत न रहेगा. हमारे स्वामी स्वयं यीशु मसीह का निवेदन है, **"स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है. इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो. और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूँ" (मत्ती 28:18-20).** हम से उद्धार का संदेश अपने मिलने वाले सभी लोगों तक पहुँचाने का हार्दिक अनुरोध किया जाता है. जगत की ज्योति यीशु स्वयं इसे इस प्रकार बताता है: **"तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता. और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है. उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देख कर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें " (मत्ती 5:14-16).** चूंकि हम अन्त के समय में रह रहे हैं, और हमारे पास लोगों के लिए एक विशेष संदेश है. **प्रकाशितवाक्य 14:6-12 और 18:4** पद में यह संदेश पाया जाता है. यह उद्धार और चेतावनी का संदेश है, जो सब जातियों व लोगों को सुनाया जायेगा.यह संदेश हमारे समय के लिए है. इस संदेश की सफलता को परमेश्वर ही सुनिश्चित करेगा. यीशु को प्रेम करने वाले अनेक लोग पहले ही रेडियो, दूरदर्शन, वीडियो, फैक्स, ई-मेल, इन्टरनेट, एसएमएस, सी डी, ऑडियो कैसेट, पुस्तकों, पत्रिकाओं और पर्चों के साथ गली-गली और घर-घर जाकर इस संदेश को संसार के लोगों तक पहुंचा रहे हैं. एक आन्दोलन चल पड़ा है, और कोई इसे रोक नहीं सकता. आप को भी इस से जुड़ना है. क्योंकि प्रभु के लिए कार्य करना अति उत्तम और उत्साहवर्धक कार्य है. परमेश्वर अपना आत्मा उन पर उंडेलेगा, जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं **(प्रेरितों के काम 5:32).** बाइबल के अनुसार यह कार्य शीघ्रता से पूरा हो जायेगा **(रोमियों 9:28).** जैसे एक गर्भवती पर जच्चा की पीड़ाऐं आ जाती हैं **(1 थिस्सलुनिकियों 5:3).** हम उस स्थिति में पहुंच गये हैं जहाँ हम अपनी आखों के सामने कार्य को तीव्रता से बढ़ता हुआ देख रहे हैं. लेकिन हमें सामान्य लोगों को नहीं भूलना है, जो सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं. ये वे लोग हैं जो घर-घर जाते, और मीडिया की पहुंच से दूर घरों में सुसमाचार पेश करते हैं. प्रभु करे कि आप भी उनके साथ जुड़ जायें, जो इस चेतावनी और उद्धार के संदेश को दूसरों को दे रहे हैं. लेकिन हमें अभी सक्रिय होना पड़ेगा, दिखाइये कि आप दूसरों की चिंता करते हैं. दिखाइये कि आप अपने भरसक प्रयास के साथ लोगों को अंधकार के साम्राज्य से एक आशा, एक भविष्य, और अनन्त जीवन में जाने में मद्द करेंगे. परमेश्वर आपके साथ रहे!

धन्य आशा में,
बेन्टे और ऐबेल स्ट्रुक्सनेस

भक्त मैत्री
Hindi Translator
24-A, Prem Nagar Colony,
Nariyal Kheda, Bhopal - 462 038
M.P. (North India)
Mobile : 09827 266186, 09993 304778
E-mail : heraldofadvent@yahoo.com

[Back to the Main Page!]

This page belongs to Abel Struksnes. For more information, contact Kristen Informasjonstjeneste, Bente og Abel Struksnes, Vestsidevn. 3111, Solberg, 3522 Bjoneroa, Norge, or send me an e-mail at abels@online.no